SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

# बाइबल संयम (शांतचित्तता) के बारे में क्या कहती है? — आधार · स्ट्रॉन्गस नंबर्स के साथ केजेवी शास्त्र

**THE FOUNDATION · THE ORIGINAL STUDY, SET IN THE ANCIENT ORDER**

*संयम — आधारभूत बाइबिल सिद्धांत*

## उद्घाटन शब्द

*अब एक अत्यंत आवश्यक वचन सुनो। आत्मा का फल संयम है — यूनानी शब्द है एग्क्रातेइया (G1466, temperance), भीतर की शक्ति, अपने ही आप पर शासन करना। यह वह शक्ति नहीं जो किसी नगर को जीत लेती है; यह वह शक्ति है जो आत्मा पर शासन करती है। यह अध्ययन तुम्हारे सामने दो मार्ग रखता है। उस राजा को देखो जो अपने ऊपर शासन नहीं कर सका: एक सब्ज़ी की बारी के लिए वह अपने बिस्तर पर लेट गया, अपना मुख फेर लिया, और कोई भोजन नहीं किया — और अंत में उसने स्वयं को बेच दिया। और वह अकेला नहीं है। शाऊल लोगों से डरा। बिलाम को मजदूरी प्रिय थी। हव्वा ने देखा और ले लिया। दाऊद ने भेजा और ले लिया। हर एक ने परमेश्वर की वाणी से ऊपर कुछ और रखा, और हर एक ने उसे पाने के लिए स्वयं को दे दिया। फिर पुत्र को देखो। वह भूखा था, और उसने पत्थरों को आज्ञा नहीं दी। उसने सारे राज्यों को देखा, और झुका नहीं। उसका अपमान हुआ, और उसने पलटकर अपमान नहीं किया। यद्यपि वह पुत्र था, तौभी उसने आज्ञाकारिता सीखी। और यहाँ तुम्हारे लिए यह शांति है: यह आत्म-संयम केवल तुम्हारा ही कार्य नहीं है — यह उसकी आत्मा का फल है, और परमेश्वर विश्वासयोग्य है कि वह बचाव का मार्ग बना दे। इसे खोज कर देखो।*

## इस अध्ययन में उत्तर दिए गए तीन प्रश्न:

1. संयम क्या है, और यह कहाँ से आता है?
2. एक व्यक्ति स्वयं को कैसे बेच देता है, जिस प्रकार अहाब और एसाव ने स्वयं को बेच दिया था?
3. आत्म-संयम का सिद्ध उदाहरण कौन है, और संयम क्या उत्पन्न करता है?

## ग्रीक मुख्य शब्द

**“संयम”** — **G1466 egkrateia** — आत्म-संयम, संयम, संयम
*आत्मा का फल संयम है*

**“संयमी”** — **G1467 egkrateuomai** — आत्म-संयम रखना, नियंत्रित करना, संयमी होना
*जो कोई भी विजय पाने के लिए प्रयत्न करता है, वह सब बातों में संयमी होता है*

**“संयम से”** — **G4996 sophronos** — संयमित मन के साथ, संयम से, संयमपूर्वक
*इस वर्तमान युग में हमें संयम से जीना अनुग्रह सिखाता है*

**“बेचा”** — **G591 apodidomi** — देना, आपेत करना, बेचना
*एसाव ने एक बार भोजन के लिए अपना पहलौठे का अधिकार बेच दिया*

**“विनम्र किया”** — **G5013 tapeinoo** — नीचा करना, दीन करना, विनम्र करना
*उसने अपने आपको दीन किया, और मृत्यु तक आज्ञाकारी बना।*

**“निन्दा की”** — **G3058 loidoreo** — निन्दा करना, गाली देना
*जब उसे गाली दी गई, तो उसने पलटकर गाली न दी*

## हिब्रू मुख्य शब्द

**“बेचा”** — **H4376 makar** — बेचना, समर्पण करना
*तू ने यहोवा की दृष्टि में बुराई करने के लिये अपने आप को बेच डाला है*

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — माकर (H4376, बेचना) वह शब्द है जो अहाब के विषय में कहा गया; अपोदिदोमी (G591, बेचना) वह शब्द है जो एसाव के विषय में लिखा गया। दो भाषाएँ, परंतु एक ही सौदा: मनुष्य अपनी अभिलाषा की वस्तु के लिए स्वयं को बेच देता है। संयम अपने आप को सुरक्षित रखना है, ताकि तुम बेचे न जाओ।)*

## खुलने वाला लंगर

**गलातियों 5:22-23** पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, और दया, भलाई, विश्वास **[G1466 egkrateia ⚑]** (23) नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं।

**संयम — आत्म-नियंत्रण — आत्मा का फल है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — ध्यान दीजिए कि संयम कहाँ स्थित है: पवित्र आत्मा के फल के बीच। यह सबसे पहले मनुष्य का कार्य नहीं है; यह फल है। egkrateia (G1466, संयम) भीतर की सामर्थ्य है — अपने आप पर स्वयं का शासन। जहाँ पवित्र आत्मा वास करता है, वहाँ यह फल बढ़ता है, और ऐसी बातों के विरुद्ध कोई कानून नहीं है।)*

### I. जब आत्म-संयम अनुपस्थित होता है — अहाब

**A. 1 राजाओं 21:1-4** नाबोत नामक एक यिज्रेली की एक दाख की बारी सामरिया के राजा अहाब के राजभवन के पास यिज्रेल में थी। (2) इन बातों के बाद अहाब ने नाबोत से कहा, “तेरी दाख की बारी मेरे घर के पास है, तू उसे मुझे दे कि मैं उसमें साग-पात की बारी लगाऊँ; और मैं उसके बदले तुझे उससे अच्छी एक वाटिका दूँगा, नहीं तो तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे उसका मूल्य दे दूँगा।” (3) नाबोत ने अहाब से कहा, “यहोवा न करे कि मैं अपने पुरखाओं का निज भाग तुझे दूँ!” (4) यिज्रेली नाबोत के इस वचन के कारण “मैं तुझे अपने पुरखाओं का निज भाग न दूँगा,” अहाब उदास और अप्रसन्न होकर अपने घर गया, और बिछौने पर लेट गया और मुँह फेर लिया, और कुछ भोजन न किया।

**आत्म-संयम का अभाव — जो चाहा वह न पा सकने के कारण वह भारी मन का, अप्रसन्न और खाने में असमर्थ हो गया।**

**B. 1 राजाओं 21:7** उसकी पत्नी ईजेबेल ने उससे कहा, “क्या तू इस्राएल पर राज्य करता है कि नहीं? उठकर भोजन कर; और तेरा मन आनन्दित हो; यिज्रेली नाबोत की दाख की बारी मैं तुझे दिलवा दूँगी।”

**ईज़ेबेल का यह प्रस्ताव कि परमेश्वर की व्यवस्था को दरकिनार कर दिया जाए, वही था जिसकी अहाब की भ्रष्ट अभिलाषा प्रतीक्षा कर रही थी।**

**C. 1 राजाओं 21:20** एलिय्याह को देखकर अहाब ने कहा, “हे मेरे शत्रु! क्या तूने मेरा पता लगाया है?” उसने कहा, “हाँ, लगाया तो है; और इसका कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिये तूने अपने को बेच डाला है। **[H4376 makar ⚑]**

**अहाब ने अपने आपको यहोवा की दृष्टि में बुराई करने के लिये बेच दिया।**

**D. 1 राजाओं 21:25** सचमुच अहाब के तुल्य और कोई न था जिसने अपनी पत्नी ईजेबेल के उकसाने पर वह काम करने को जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपने को बेच डाला था। **[H4376 makar ⚑]**

**अहाब के तुल्य कोई न था, जिस ने बुराई करने के लिये अपने आप को बेच डाला, और जिसे उसकी अपनी पत्नी ने उभारा।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — एक राजा था, और वह स्वयं पर शासन नहीं कर सका। एक पूरा राज्य उसका था, फिर भी एक साग-सब्ज़ी के बगीचे ने उसे उदास कर दिया और उसकी भूख छीन ली। शब्द है माकर (H4376, बेचना): उसने अपनी इच्छा पाने के लिए स्वयं को बेच दिया। यही संयम का अभाव है — मनुष्य इच्छा का स्वामी नहीं है; इच्छा मनुष्य की स्वामी है।)*

### II. स्वयं को बेच देने का प्रतिरूप — परमेश्वर की आज्ञाकारिता से बढ़कर मूल्यवान समझी गई कोई भी वस्तु

**A. 1 शमूएल 15:24** शाऊल ने शमूएल से कहा, “मैंने पाप किया है; मैंने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है।

**शाऊल ने परमेश्वर की वाणी की आज्ञा मानने से अधिक लोगों के भय और प्रशंसा को महत्व दिया।**

**B. 2 पतरस 2:15** वे सीधे मार्ग को छोड़कर भटक गए हैं, और बओर के पुत्र बिलाम के मार्ग पर हो लिए हैं; जिसने अधर्म की मजदूरी को प्रिय जाना; (गिन. 22:5-7)

**बिलाम ने अधर्म की मजदूरी को परमेश्वर की आज्ञाकारिता से बढ़कर समझा।**

**C. उत्पत्ति 3:6** अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, जो उसके साथ था और उसने भी खाया। (1 तीमु. 2:14)

**हव्वा ने फल की शोभा और बुद्धि पाने की लालसा को परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पण से बढ़कर आंका।**

**D. 2 शमूएल 11:2-4** साँझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी। (3) जब दाऊद ने भेजकर उस स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा, "क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है?" (4) तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा लिया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। (वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी) तब वह अपने घर लौट गई।

**दाऊद ने उसकी संगति के सुख को परमेश्वर की आज्ञा के पालन से बढ़कर महत्व दिया।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — चार जीवनों में एक ही प्रारूप को देखिए: शाऊल डरा, बिलाम ने प्रेम किया, हव्वा ने देखा, दाऊद ने ले लिया। इनमें से किसी को भी बाध्य नहीं किया गया था। हर एक ने परमेश्वर की वाणी से बढ़कर किसी वस्तु को महत्व दिया, और उसे पाने के लिए स्वयं को सौंप दिया। वस्तु भिन्न है; सौदा वही है।)*

## III. मसीह — आत्म-संयम का सिद्ध उदाहरण

**A. इब्रानियों 5:8** और पुत्र होने पर भी, उसने दुःख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी।

**यद्यपि वह पुत्र था, तौभी उसने दुःख उठाकर आज्ञा माननी सीखी।**

**B. फिलिप्पियों 2:8** और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। **[G5013 tapeinoo ⚑]**

**और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली.**

**C. 1 पतरस 2:22-23** न तो उसने पाप किया, और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली। (यशा. 53:9, 2 कुरि. 5:21) **[G3058 loidoreo ⚑]** (23) वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। (यशा. 53:7, 1 पत. 4:19)

**गाली खाकर उसने पलटकर गाली न दी, परन्तु अपने आप को उसके हाथ में सौंप दिया जो धर्म से न्याय करता है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — अहाब के पास राज्य था परन्तु स्वयं पर कोई शासन नहीं था; पुत्र के पास सारी सामर्थ्य थी और पूर्ण अधिकार था। उसने स्वयं को नम्र बनाया — तपेइनोओ (G5013, नीचा करना)। उसका अपमान किया गया — लोइडोरेओ (G3058, गाली देना) — और उसने उत्तर में कुछ न कहा। संयम कमजोरी नहीं है; यह वह सामर्थ्य है जो परमेश्वर की इच्छा के आगे झुक जाती है, यहाँ तक कि मृत्यु तक।)*

## IV. संयम क्या उत्पन्न करता है — फल और मुकुट

**A. 2 पतरस 1:5-6** और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ **[G1466 egkrateia ⚑]** (6) और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति

**संयम ज्ञान में जोड़ा जाता है, और संयम से धीरज उत्पन्न होता है, और धीरज से भक्ति।**

**B. 1 कुरिन्थियों 9:24-25** क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो। **[G1467 egkrateuomai ⚑]** (25) और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुर्झानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुर्झाने का नहीं।

**हर वह मनुष्य जो प्रतिस्पर्धा में विजय के लिए प्रयत्न करता है, वह सब बातों में संयमी होता है, ताकि एक अविनाशी मुकुट पाए।**

**C. तीतुस 2:11-12** क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों में उद्धार लाने में सक्षम है । **[G4996 sophronos ⚑]** (12) और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धार्मिकता से और भक्ति से जीवन बिताएँ;

**अनुग्रह स्वयं हमें सिखाता है कि हम सांसारिक अभिलाषाओं को अस्वीकार करें और इस वर्तमान जगत में संयम से जीवन बिताएँ।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — क्रम पर ध्यान दें: संयम को ज्ञान में जोड़ा गया है, और धीरज संयम पर बनाया गया है। और अनुग्रह सिखाता है: वही अनुग्रह जो उद्धार लाता है, हमें सांसारिक अभिलाषाओं को नकारना और संयम से जीना सिखाता है — सोफ्रोनोस (G4996, संयम से), स्वस्थ मन के साथ। जो लोग नाशवान मुकुट के लिए दौड़ते हैं वे सब बातों में संयमी होते हैं — एन्क्रातेउओमाई (G1467, संयमी होना) — तो हमें अविनाशी मुकुट के लिए कितना अधिक संयमी होना चाहिए।)*

**दो का मुख — शब्द बेचा गया: माकार (H4376, बेचना) और अपोदीदोमी (G591, बेचना)**

**A. 1 राजाओं 21:20** एलिय्याह को देखकर अहाब ने कहा, "हे मेरे शत्रु! क्या तूने मेरा पता लगाया है?" उसने कहा, "हाँ, लगाया तो है; और इसका कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिये तूने अपने को बेच डाला है। **[H4376 makar ⚑]**

**एक राजा ने साग-सब्ज़ी की एक बारी के लिए स्वयं को बेच दिया।**

**B. इब्रानियों 12:16-17** ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो, जिसने एक बार के भोजन के बदले अपने पहलौठे होने का पद बेच डाला। (कुलु. 3:5, उत्प. 25:31-34) **[G591 apodidomi ⚑]** (17) तुम जानते तो हो, कि बाद में जब उसने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आँसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला।

**एक पहलौठे पुत्र ने अपना जेठा हक एक बार के भोजन के बदले बेच दिया, और इब्रानियों उसमें वह बात जोड़ता है जो राजाओं में नहीं है — वे आँसू जो उस सौदे को वापस नहीं मोल ले सके।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — इस अध्ययन में शामिल सभी पुरुषों में से, "बेच दिया" शब्द केवल दो के विषय में लिखा गया है: अहाब और एसाव। एक राजा ने धार्मिकता को एक सब्ज़ी के बाग़ के बदले बेच दिया; एक पहलौठे ने अपनी विरासत को एक भोजन मात्र के बदले बेच दिया। राजाओं की पुस्तक अहाब का अंत न्याय के साथ करती है, परंतु इब्रानियों अकेली एसाव को आगे तक ले जाती है — उस दिन तक जब उसने आँसुओं के साथ आशीष को वापस पाने का प्रयत्न किया, और पश्चाताप का कोई स्थान न पाया। अपने आप को मत बेचो; कुछ सौदे फिर से मोल नहीं लिए जा सकते।)*

**C. सभोपदेशक 4:12** यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परन्तु दो उसका सामना कर सकेंगे। जो डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती।

**परन्तु दो उसका सामना कर सकेंगे + जो डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती.**

**छाया और पूर्णता — त्रिविध अभिलाषा, और एक की आज्ञाकारिता**

**Shadow उत्पत्ति 3:6** अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, जो उसके साथ था और उसने भी खाया। (1 तीमु. 2:14)

**आत्म-नियंत्रण की पहली विफलता: भोजन, आँखें, और बुद्धि की चाह।**

**1 यूहन्ना 2:16** क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। (रोम. 13:14, नीति. 27:20)

**फिर से वही तीन नाम लिए गए हैं।**

**Fulfillment मत्ती 4:3-4** तब परखनेवाले ने पास आकर उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।” (4) यीशु ने उत्तर दिया, “लिखा है, ‘मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।’”

**मत्ती 4:8-10** फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर (9) उससे कहा, “यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा ।” (10) तब यीशु ने उससे कहा, “हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है: ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।’” (व्यव. 6:13)

**भूख की परीक्षा में और आँखों की अभिलाषा में परखे जाने पर, उसने वचन से उत्तर दिया और केवल परमेश्वर की आराधना की।**

**रोमियों 5:19** क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।

**एक मनुष्य की अनाज्ञाकारिता से बहुत लोग पापी बनाए गए; एक के आज्ञापालन से बहुत लोग धर्मी बनाए जाते हैं।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — वही तीन द्वार: शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा, और जीवन का घमण्ड। पेड़ के पास स्त्री ने देखा, चाहा, लिया, और खाया। जंगल में पुत्र को उन्हीं द्वारों पर परखा गया, और उसने हर एक का उत्तर दिया, लिखा है। जहां पहला मनुष्य गिरा, वहां एक की आज्ञाकारिता से बहुत लोग धर्मी ठहरे।)*

## समापन

**1 कुरिन्थियों 10:13** तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने के बाहर है: और परमेश्वर विश्वासयोग्य है: वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको। (2 पत. 2:9)

**परमेश्वर विश्वासयोग्य है, और परीक्षा के साथ बचने का मार्ग भी बना देगा।**

**2 पतरस 1:6** और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति **[G1466 egkrateia ⚑]**

**संयम पर धैर्य + धैर्य पर भक्ति।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — यहाँ है सारा अध्ययन एक ही पंक्ति में: संयम, एग्क्रातेइया (G1466, संयम), आत्मा का फल है — स्वयं को उसकी शक्ति द्वारा शासित होना। अहाब ने स्वयं को बेच दिया, माकर (H4376, बेचना); एसाव ने अपना पहलौठे का अधिकार बेच दिया; शाऊल, बिलाम, हव्वा, और दाऊद ने प्रत्येक ने परमेश्वर की वाणी से बढ़कर किसी वस्तु को मूल्यवान समझा। परन्तु पुत्र ने मृत्यु तक भी स्वयं को वश में रखा, और एक के आज्ञापालन से बहुत से लोग धर्मी ठहराए गए। और परमेश्वर विश्वासयोग्य है: तुम्हारी परीक्षा उससे अधिक नहीं होने दी जाएगी जितनी तुम सह सकते हो, और परीक्षा के साथ वह बचने का मार्ग भी बना देता है। अपने ज्ञान में संयम जोड़ो, और अविनाशी मुकुट के लिए दौड़ो।)*

## अभ्यास प्रश्नोत्तरी

**1. गलातियों 5:22-23 — परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और:**

a) बुद्धि
b) संयम
c) ज्ञान

**2. 1 राजा 21:20 — तू ने अपने आप को बेच डाला है:**

a) यहोवा की दृष्टि में बुराई करना
b) लोगों की दृष्टि में दुष्टता करना

c) अपने पितरों के मार्ग पर चल

**3. 1 शमूएल 15:24 — शाऊल ने कहा, मैंने यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन किया है, क्योंकि:**

a) मैं यहोवा से डरा, और उसकी वाणी का पालन किया
b) लोगों ने लूट में से ले लिया
c) मैं लोगों से डर गया, और उनकी बात मान ली

**4. 2 पतरस 2:15 — बओर का पुत्र बालाम ने प्रेम किया:**

a) फाल की मजदूरी
b) सही मार्ग
c) अधर्म की मजदूरी

**5. 1 पतरस 2:23 — जब वह गाली खाता था, तो वह:**

a) पलटकर गाली नहीं दी
b) फिर से उत्तर दिया
c) उन्हें होने नहीं दिया

**6. इब्रानियों 12:16 — कि कोई ऐसा न हो, जैसा एसाव, जिस ने एक बार भोजन के लिये अपना पहलौठे के हक को बेच डाला।**

a) उसका आशीर्वाद
b) उसका जन्मसिद्ध अधिकार
c) उसकी विरासत

**7. 1 कुरिन्थियों 10:13 — परमेश्वर विश्वासयोग्य है, जो परीक्षा के साथ यह भी करेगा कि:**

a) बचने का मार्ग
b) पश्चाताप का स्थान
c) पाप का अंत

**उत्तर कुंजी: 1-b, 2-a, 3-c, 4-c, 5-a, 6-b, 7-a**

## यह अध्ययन कैसे शाखाओं में विभाजित होता है

**→ बिके हुए कैसे मुक्त किए जाते हैं: अहाब और एसाव ने अपने आप को बेच दिया, परन्तु तुम दाम देकर खरीदे गए हो (1 कुरिन्थियों 6:20) — पाप के हाथ बिके हुए (रोमियों 7:14), फिर भी श्राप से छुड़ाए गए (गलातियों 3:13)।**

**→ नगर किस प्रकार सुरक्षित रहता है: जो अपनी आत्मा पर शासन नहीं रखता, वह ऐसे नगर के समान है जो नाश हुआ और जिसकी शहरपनाह गिरा दी गई है (नीतिवचन 25:28); और जो अपनी आत्मा पर शासन रखता है, वह उससे भी उत्तम है जो किसी नगर को जीत लेता है (नीतिवचन 16:32)।**

**दौड़ कैसे दौड़ी जाती है: सब बातों में संयमी होना हमें धीरज से उस दौड़ को दौड़ने की ओर ले जाता है जो हमारे आगे धरी है, और यीशु की ओर देखते हुए (इब्रानियों 12:1-2)।**

**सीढ़ी कैसे चढ़ती है: ज्ञान पर संयम, संयम पर धीरज, धीरज पर भक्ति (2 पतरस 1:5-7) — कि तुम न तो निकम्मे हो, और न निष्फल (2 पतरस 1:8)।**

**परीक्षा में पड़े हुओं की सहायता कैसे होती है: क्योंकि वह आप ही परीक्षा में पड़कर दुःख उठा चुका है, इसलिए परीक्षा में पड़े हुओं की सहायता कर सकता है (इब्रानियों 2:18) — जो सब बातों में हमारी नाईं परीक्षा में पड़ा, तौभी निष्पाप रहा (इब्रानियों 4:15)।**

**अनुग्रह कैसे सिखाता है: संयम से जीना उस धन्य आशा और महिमामय प्रकट होने की खोज की ओर ले जाता है (तीतुस 2:13) — एक विलक्षण प्रजा, जो सत्कर्मों में उत्साही है (तीतुस 2:14)।**

## SOURCES & CREDITS

Scripture: Hindi Indian Revised Version Bible (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.

Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEPBible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEPBible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).